International Journal of Sanskrit Research 2024; 10(5): 120-125

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2024; 10(5): 120-125
© 2024 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 02-07-2024
Accepted: 06-08-2024

विजय सिंह सैनी
शोध-छात्र, संस्कृत विभाग
मोहनलाल सुखाड़िया
विश्वविद्यालय, उदयपुर,
राजस्थान, भारत

Corresponding Author:
विजय सिंह सैनी
शोध-छात्र, संस्कृत विभाग
मोहनलाल सुखाड़िया
विश्वविद्यालय, उदयपुर,
राजस्थान, भारत

नाचिकेतोपाख्यान के महाभारतीय सन्दर्भ: एक संक्षिप्त विश्लेषण

विजय सिंह सैनी

DOI: https://doi.org/10.22271/23947519.2024.v10.i5c.2489

सारांश
नाचिकेतोपाख्यान भारतीय वाङ्मय में अतिप्राचीनकाल से प्रचलित रहा है। ऋग्वेद के 10/135 वे सूक्त में इस आख्यान के सर्वप्रथम दर्शन होते हैं। एतद्पश्चात यजुर्वेद के तैत्तिरीय ब्राह्मण में भी यह आख्यान किञ्चित् परिवर्तित स्वरूप में उपलब्ध होता है जिस पर विद्वान भाष्यकार आचार्य सायण ने भी सूक्ष्म विमर्श प्रस्तुत किया है। एतद् अतिरिक्त यजुर्वेदीय कठोपनिषद् में यम और नचिकेता के गूढ दार्शनिक आत्म-विषयक संवाद के रूप में भी यह आख्यान विस्तृत रूप में प्राप्त होता है। कालान्तर में महर्षि वेदव्यास द्वारा विरचित महाभारत के अनुशासन पर्व के 71वे अध्याय में भी इस विषय को प्रमुखतया से रेखाङ्कित किया गया है। महाभारतोक्त नाचिकेतोपाख्यान मनुष्यों के निकृष्ट कार्यों के परिणाम स्वरूप प्राप्त होने वाले भयानक नरकों के चित्रण एवं भारतीय संस्कृति में गोदान के महत्त्व को स्पष्ट करते हुए सत्कर्मों में प्रवृत्त रहने वाले के उपदेश के रूप में पाठकों के समक्ष प्रस्तुत होता है।

कूटशब्द: नाचिकेतोपाख्यान, भारतीय वाङ्मय, ऋग्वेद, यजुर्वेद

प्रस्तावना

आख्यान: स्वयं दृष्ट अर्थ का कथन (अर्थात् ऐसे अर्थ का प्रकाशन जिसका साक्षात्कार वक्ता ने स्वयं किया है), इसके विपरीत उपाख्यान होता है श्रुत (सुने गये) अर्थ का कथन (अर्थात् वक्ता के द्वारा परम्परया सुने गये, अनुभूत नहीं, अर्थ का प्रकाशन 'उपाख्यान' शब्द के द्वारा किया जाता है,)[1]

इस विवेचन के अनुसार राम,नचिकेता, ययाति आदि के कथानक, जिनकी परम्परा श्रुत है, रामोपाख्यान,नाचिकेतोपाख्यान, ययात्युपाख्यान के नाम से कमश: अभिहित किये जाते हैं। लेकिन इन दोनों के पार्थक्य का अन्य कारण भी कल्पित किया गया है। अन्य विद्वानों की सम्मति में यह भेद दृष्ट-श्रुत का न होकर महत्-स्वल्प आकार का ही

है। आकार में जो महान् या वृहत् हो, वह तो है- आख्यान और अपेक्षाकृत स्वल्प आकार का जो कथानक होता है, वह उपाख्यान के नाम से प्रसिद्ध है। इस मत में रामायण है, राम का आख्यान है तथा उसके एकदेश में वर्तमान रहने वाला सुग्रीव का कथानक 'उपाख्यान' के नाम से प्रसिद्ध है।

तथ्य यह है कि प्राचीन ग्रन्थों में 'आख्यान' का ही बहुल प्रयोग 'इतिहास' (महाभारत) तथा 'पुराण' के लिए किया गया है। इसकी पुष्टि में कतिपय उदाहरण दिए जाते हैं। महाभारत तो साधारणतया 'इतिहास' कहा जाता है। वह स्वयं अपने को 'इतिहास' 'इतिहासोत्तम' कहता है, परन्तु वहीं वह अपने के लिए 'आख्यान' नाम का भी प्रयोग करता है।[2]

'इतिहास' का प्रयोग

जयनामेतिहासोऽयं श्रोतव्यो विजिगीषुणा ।[3]
जयनामेतिहासोऽयं श्रोतव्यो मोक्षमिच्छता ।[4]
इतिहासोत्तमादस्माज्जायन्ते कविबुद्धय: ।[5]

आख्यान का प्रयोग

अनाश्रित्येदमाख्यानं कथाभुवि न विद्यते ।[6]
इदं कविवरै: सर्वैराख्यानमुपजीव्यते ।[7]

आख्यान स्वरूप

'आख्यान' शब्द का अर्थ है किसी पूर्वज्ञात (प्रत्यक्ष या प्रामाणिक रूप से या परम्परागत) घटना या अवस्थिति को समझाने की क्रिया। 'ख्या' का अर्थ होता है प्रकट करना और 'आ' जोड़ने से उसका अर्थ होता है-भली-भाँति प्रकट करना। अभिनवगुप्त ने आख्यान का लक्षण बतलाते हुए कहा कि आख्यान दृष्टार्थकथन है। 'अर्थ'शब्द वस्तुओं और घटनाओं की तथ्यता है। वस्तुतः जो वस्तु दिखायी पड़ती है या जो घटना घटती है, उसका आधा ही ज्ञान होता है। इन्द्रियों से या मन से आधा ही ज्ञात हो पाता है। उसकी वास्तविकता का पूरा ज्ञान नहीं होता; क्योंकि वह वास्तविकता केवल इन्द्रियगोचर या केवल मनोगोचर नहीं है। कभी-कभी वह बुद्धिगोचर भी नहीं होती। वह चेतना के सबसे भीतर के प्रकाश से उन्मीलित होती है। इसलिये दृष्टार्थ कथन की परिभाषा अत्यन्त व्यापक है और इस परिभाषा में यह निहित है कि वह न तो किसी घटना का इतिहास है और न किसी घटना का आधिभौतिक विवरण। हमारी प्रवृत्ति हर विषय को उसकी समग्रता से समझने की रही है।

इतिहास इस समझ का अंशमात्र है। जब आख्यायिका का संस्कृत में लक्षण यह किया जाता है कि वह प्रसिद्ध इतिवृत्तों पर आधारित होता है, तब उसका अर्थ यह होता है कि यह प्रसिद्धि केवल ऐतिहासिक दृष्टि से नहीं है। यह आभ्यन्तर चक्षु से प्रमाण पुरुषों के द्वारा की गयी अपरोक्ष अनुभूति का परिणाम है। वैदिक आख्यान वैसे तो संहिता भाग में ही मिलने लगते हैं, पर ब्राह्मणों, आरण्यकों और उपनिषदों में आये आख्यान विशेष महत्त्व रखते हैं। ब्राह्मणों में जब किसी अनुष्ठान की प्रक्रिया को समझना होता था तो एक आख्यान सुनाया जाता था। वह आख्यान क्रिया की अभिव्याप्ति स्पष्ट करता था।इस प्रकार से यह आख्यान प्रत्येक आनुष्ठानिक सोपान को समझने के लिये एक बड़ा चौखटा प्रदान करता था। कभी यह आख्यान सादृश्य-मूलक है, कभी प्रतीकात्मक है, कभी अन्योक्तिपरक है, कभी कार्य विशेष में घटी घटना को देशातीत और कालातीत प्रस्तुत करने वाला है। ऐसे ही आख्यानों का उपबृंहण पुराणों में हुआ है। ये ही हमारे काव्य-साहित्य और नाट्यशास्त्र के बीज बनते हैं और ये ही हमारी कलाओं के सन्दर्भ बनते हैं।

वैदिक आख्यानों का सौन्दर्य तीन बातों में है। एक तो ये अत्यन्त संक्षिप्त हैं, इनमें नाटकीय चढ़ाव-उतार है और मुख्य प्रतिपाद्य ही दिया है। उसको सजाने की कोशिश नहीं की गयी है। भाषा बड़ी पारदर्शी है, पर उसके साथ-साथ बड़ी गहरी है, बहुस्तरीय है। उसमें प्रवेश करते ही पटल-पर-पटल खुलते चले जाते हैं। कहीं भी शब्द का अपव्यय नहीं है। हर आख्यान का अन्त किसी-न-किसी प्रकार की पूर्णता के भाव से होता है, इसीलिए ये आख्यान कालातीत हैं और परिणामतः इतिहास से भी बाहर हैं। एक प्रकार से सनातन हैं। इन आख्यानों में इतिवृत्तों का विस्तार सीधी रेखा में नहीं है। जैसे– इस घटना के बाद यह घटना आदि। न इनका विस्तार एक वृत्त के रूप में

होता है, जहाँ से घटना शुरू हो वहीं पर लौट आये। यहाँ जो कुछ भी है, वह एक खुला वृत्त है अर्थात् ऐसा विवरण है जिसमें आगे बढ़ाने का अवकाश वर्तमान है। शङ्खवलय जैसे होता है। उसमें छोटे वृत्त का विस्तार बड़े-से-बड़े वृत्तों में होता चला जाता है। वैसे ही इन आख्यानों का विस्तार सम्भव होता है। तीन-चार पङ्क्तियों का आख्यान एक बहुत बड़ी कथा बन जाती है। दौः षन्ति–भरत का आख्यान अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक बना। पुरूरवा-उर्वशी के आख्यान में अरणि-मन्थन (आग धधकाने के लिये जिन लकड़ियों का प्रयोग होता है, उन्हें 'अरणि' कहते हैं)- के प्रसङ्ग में और विस्तृत होकर मनुष्य और प्रकृति के बीच रूपान्तरण की सम्भावनाओं का अत्यन्त संश्लिष्ट रूपक बन जाता है। उत्तरवर्ती साहित्य को पूरी तरह समझने के लिये ये वैदिक आख्यान कुञ्जी है। उदाहरण के लिये छान्दोग्योपनिषद् घोर अङ्गीरस और देवकीपुत्र कृष्ण-संवाद का आख्यान ही गीता की आधारपीठिका है। यहाँ इस आख्यान को पूरा देना सङ्गत होगा।

संस्कृत साहित्य में वेदव्यास को महर्षि वाल्मीकि के पश्चात् सर्वमान्य आर्ष कवि के रूप में समादृत किया गया है। महाभारत एक अद्भुत ग्रन्थ है जिसमें मानव जीवन और समाज के किसी भी पक्ष को उपेक्षित नहीं किया गया है। महाभारत के आदि पर्व में इसकी महत्ता को प्रकट करने वाला एक पद्य है जहाँ इसे एक साथ अर्थशास्त्र, धर्मशास्त्र और कामशास्त्र कहा गया है।

> अर्थशास्त्रमिदं प्रोक्तं धर्मशास्त्रमिदं महत्।
> कामाशास्त्रमिदं प्रोक्तं व्यासेनामितुबुद्धिना।।[8]

प्रस्तुत महाभारत अर्थनीति, राजनीति, अध्यात्म एवं दर्शन का अद्भुत समन्वय है। भारतीय संस्कृति के प्राण स्वरूप इस ग्रन्थ रत्न में मानव जीवन को उन्नति के पथ पर ले जाने वाले समस्त सूत्र निहित हैं। महाभारत का यह सन्देश है कि इन्द्रियों पर विजय पाकर मनुष्य अपने जीवन को सफल कर सकता है हमारी संस्कृति में सरल जीवन ही श्रेयस्कर कहा गया है।धर्म के आश्रय को ही विजय का मार्ग कहा गया है। जैसा कि विदित है। महाभारत समस्त ज्ञान-विज्ञान का कोश है। इसके अनुरूप इस ग्रन्थ में अठारह पर्वों में जीवन और जगत् के समस्त प्रश्नों को समाहित किया गया है। इसे पञ्चम वेद तक कहा गया है। महाभारत में अगणित लोक कथाएँ और उपाख्यान अनुस्यूत हैं। महाभारत में उल्लिखित उपाख्यान रोचक होने के साथ-साथ शिक्षाप्रद भी हैं। महत्त्वपूर्ण उपाख्यानों में शकुन्तलोपाख्यान, मत्स्योपाख्यान, रामोपाख्यान, शिविउपाख्यान, सावित्री उपाख्यान, नलोपाख्यान इत्यादि उल्लेखनीय हैं।

महाभारत के इन्हीं उपाख्यानों को आधार बनाकर परिवर्तित साहित्य में संस्कृत वाङ्मय और इतर साहित्य में काव्य, साहित्य, गद्य, नाटक, चम्पू, पद्य, कथा, आख्यायिका इत्यादि नाना प्रकार की साहित्य सरणिया उद्भूत हुई हैं। इन्हीं उपाख्यानों में से महाभारत के अनुशासन पर्व में समागत नाचिकेतोपाख्यान अपनी धार्मिक, आध्यात्मिक और दार्शनिक महत्ता के कारण सर्वमान्य है। पिता के शाप से कुमार नचिकेता के यमराज के पास जाने और यमराज द्वारा कुमार को गोदान के महत्त्व आदि बताने के क्रम में हमें इस आख्यान की उपलब्धि होती है। इस पर्व के 71वें अध्याय में धर्मराज युधिष्ठिर और पितामह भीष्म के संवाद रूप में यह आख्यान उपलब्ध होता है। इस अध्याय को महाभारत में 'यमवाक्य' नामक अध्याय भी कहा गया है। युधिष्ठिर द्वारा गोदान की महिमा के प्रति भीष्म के समक्ष जिज्ञासा प्रकट की जाती है और भीष्म उद्दालक ऋषि और कुमार नचिकेता के संवाद रूप इस प्राचीन इतिहास अथवा उपाख्यान का सङ्केत करते हैं। महाभारत में इस कथा के स्वरूप में पर्याप्त भेद दृष्टिगत होता है। महर्षि उद्दालक यज्ञ की दीक्षा लेने के बाद अपने पुत्र नचिकेता से उनकी सेवा में रहने का निर्देश देते हैं। यज्ञ नियम के समाप्त हो जाने पर महर्षि ने समिधा, कुश, पुष्प, जल का घड़ा और प्रचुर फल, मूल आदि का सङ्ग्रह नदी किनारे रखकर स्वयं स्नान एवं वेदपाठ करने के लिए चले जाते हैं। बाद में नचिकेता से समस्त सामग्री लाने का आह्वान करते हैं। परन्तु समग्र सामग्री नदी के वेग में बह जाती है और नचिकेता खाली हाथ अपने पिता के पास आते हैं। भूख-प्यास से व्याकुल उद्दालक ऋषि पुत्र पर कुद्ध हो जाते हैं और उसे यमराज के पास जाने का

शाप दे देते हैं।पिता के इस कठोर वचन से नचिकेता मूर्छित होकर पृथ्वी पर गिर जाता है। यह अवस्था देखकर पिता भी मूर्छित हो जाते हैं। धीरे-धीरे दोनों में चेतना आती है और उद्दालक नचिकेता से पूछते हैं कि वह कहाँ चला गया था। तत्पश्चात् नचिकेता ने यमलोक में प्रत्यक्ष की गयी समस्त वार्ता का विवरण पिता के समक्ष प्रस्तुत करता है।

नचिकेता के अनुसार जब पिता की आज्ञा पाकर मनोहर कान्ति एवं प्रभाव से युक्त विशाल यमपुरी में नचिकेता पहुँचता है तो वहाँ की शोभा देखकर यमपुरी के तेज से नचिकेता विस्मित हो जाता है। यमराज उसे बुलाकर उचित आसन देते हैं और अपने सेवकों को उस कुमार के समुचित अर्घ और पूजन करने का निर्देश देते हैं। फिर नचिकेता यमराज से पिता के क्रोध का वर्णन करते हैं जिस पर यमराज उन्हें यमलोक के अयोग्य बतलाते हैं। परन्तु महर्षि उद्दालक को प्रज्वलित अग्नि के समान तेजस्वी भी बतलाते हैं। यमराज नचिकेता को अपना अतिथि बतलाते हैं और आग्रह पूर्वक अपने मनोवाञ्छित पदार्थ माँग लेने का आग्रह करते है।

> दृष्टस्तेऽहं प्रतिगच्छस्व तात शोचत्यसौ तव देहस्य कर्ता।
> ददानि किं चापि मनः प्रणीतं प्रियातिथेस्तव कामान् वृणीष्व।। [9]

यमराज के इस प्रस्ताव को सुनकर बालक नचिकेता कहते हैं कि उसका पृथ्वी पर लौटकर जाना अत्यन्त कठिन है परन्तु यम यदि उन्हें सत पात्र समझते हों तो वे उसे पुण्यात्मा पुरुषों को प्राप्त होने वाले समृद्धिशाली लोकों के दर्शन करायें। तत्पश्चात् उत्तम प्रकाश से युक्त तेजस्वी रथ पर बैठाकर यम देवता ने कुमार नचिकेता को उत्तम लोकों के दर्शन करायें।वे लोक विविध प्रकार के रत्नों से निर्मित भवनों और अट्टालिकाओं से सुशोभित थे जिनकी शोभा का वर्णन शब्दों में करना सम्भव नहीं है। उन लोकों के भवन दिव्य साधनों से सम्पन्न थे। उन उत्तम लोकों में बहुत सी नदियाँ, गलियाँ, सभाभवन, बावड़ियाँ और तालाब उपस्थित थे। वहाँ नचिकेता ने दूध को प्रवाहित करने वाली नदियाँ, पर्वत, घृत और निर्मल जल को भी देखा। विस्मित बालक ने यमराज से उन अक्षय स्रोतों के विषय में पूछा तो यमराज ने उन नदियों को गोरस दान करने वाले श्रेष्ठ पुरुषों का भोजन बतलाया। वे श्रेष्ठ पुरुष गोदान में तत्पर रहने वाले हैं और सनातन लोकों में प्रशस्त हैं। वे सुपात्र ब्राह्मण, उत्तम समय, विशिष्ट गौ तथा सर्वोत्तम दान की विधि को जानकर ही गोदान करते हैं। दान में किस प्रकार की गायों का चयन किया जाये। यह तथ्य भी यमराज विस्तारपूर्वक बतलाते हैं। दान में दी जाने वाली गाय पुष्ट, सुन्दर, बछड़ों वाली, उत्तमशील स्वभाव वाली, दुधारू गाय होनी चाहिए। इस क्रम में यमराज ने गायों के अलावा प्रशिक्षित, बलवान, बोझ ढ़ोने में समर्थ, कृषक समुदाय को जीविका चलाने में सहयोगी, पराक्रमी और विशाल डील-डौल वाले बैलों को भी ब्राह्मणों को देने योग्य बतलाते हैं। इस क्रम में दान ग्रहण करने वाले उत्तम ब्राह्मण पात्रों का भी यमराज ने निर्देश किया है।

गोदान को स्वीकार करने वाले ब्राह्मण को स्वाध्याय से सम्पन्न, तपस्वी और यज्ञ के अनुष्ठान में लगा हुआ होना चाहिए। इसके अलावा जो ब्राह्मण कृच्छ्र व्रत से मुक्त हुए हो, वे भी दान ग्रहण करने के पात्र हैं। दान देने वाले यजमान को तीन रात्रियों तक उपवास पूर्वक केवल जल पीकर धरती पर शयन करना चाहिए फिर गायों और ब्राह्मणों को भोजन से सन्तुष्ट कर गोदान की प्रक्रिया करनी चाहिए। जो ब्राह्मण गायों के प्रति दयालु और क्षमाशील हो, जिसके पास कोई आजीविका हो और जो गायों की रक्षा करने में समर्थ हो वैसे ब्राह्मण को ही गाय का दान करना चाहिए। इसके अलावा जो ब्राह्मण वृद्ध हो, रोगी होने के कारण पथ्य भोजन करना चाहता हो, अकाल से पीड़ित हो, किसी यज्ञ का अनुष्ठान करना चाहता हो, उसे खेती के लिए आवश्यकता हो, जिसके घर कोई बालक उत्पन्न होने वाला, जिसे गुरु दक्षिणा देनी हो, ऐसे ब्राह्मणों को भी गोदान करना चाहिए। ऐसे समय में देशकाल का विचार नहीं करना चाहिए।

इस प्रसङ्ग में नचिकेता को यह जिज्ञासा हुई कि यदि कोई व्यक्ति दरिद्र हो और अभावों में जीता हो तो वह गोदान करने की स्थिति में नहीं होगा। फिर ऐसी स्थिति में अभावग्रस्त व्यक्ति गोदान से प्राप्त होने वाले उत्तम

लोकों को कैसे प्राप्त करेगा। इसके उत्तर में यमराज ने गौओं के अभाव में नियमपूर्वक घृतधेनु दान करने के लिए कहा है और यदि घृत का भी अभाव हो तो व्रत नियम से युक्त व्यक्ति तिलों से बनी हुई धेनु का भी दान कर सकता है और यदि किसी के पास तिल भी ना हो तो ऐसा व्यक्ति नियम और व्रत पूर्वक जलमयी धेनु का दान कर सकता है। इस प्रकार गौओं के अभाव में घृत, तिल और जलमयी धेनु का दान कर उत्तम लोकों की प्राप्ति हो सकती है।

इसके पश्चात् नचिकेता ने अपने पिता को यह बतलाया कि धर्मराज ने उसे वे सारे ही लोक दिखायें साथ ही बालक नचिकेता ने यमराज के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुए कहा कि उसने थोड़े से धन से सिद्ध होने वाला महान् गोदान रूप यज्ञ को प्राप्त किया है जो वेद-विधि के अनुसार नचिकेता के नाम से प्रचलित होगा। इसके पश्चात् नचिकेता अपने पिता के प्रति भी कृतज्ञता व्यक्त करते हैं जिसके शाप के कारण नचिकेता यमलोक को जा सका।

> शापो ह्ययं भवतोऽनुग्रहाय प्राप्तो मया यत्र दृष्टो यमो वै।
> दानव्युष्टिं तत्र दृष्ट्वा महात्मन् निःसंदिग्धान् दानधर्माश्चरिष्ये।। [10]

इसी क्रम में नचिकेता आगे कहते हैं कि दान के फल को प्रत्यक्ष देखकर सन्देह रहित होकर वे दान-धर्मों का अनुष्ठान करेंगे। नचिकेता अपने पिता से यमराज द्वारा गोदान के विषय में कहे गये माहात्म्य और उसकी प्रक्रिया का उल्लेख करते हैं। यमराज के अनुसार जो लोग दान से सदा पवित्र होना चाहते हैं वे विशेष रूप से गोदान कर सकते हैं।उनके अनुसार धर्म एक निर्दोष विषय है अतः धर्म की अवहेलना नहीं करनी चाहिए। सतपात्र को उचित देश और काल में दान दिया जाना चाहिए। यमराज ने अनेक शुद्ध चित्त श्रद्धालु एवं पुण्यात्मा पुरुषों का उल्लेख करते हुए उनके द्वारा ईष्या रहित होकर यथाशक्ति गोदान कर उत्तम लोकों की प्राप्ति कर कथन किया। यमराज के अनुसार न्याय पूर्वक उपार्जित किये गये गो-धन को ही ब्राह्मण को देना चाहिए और किसी भी शुभ अष्टमी से आरम्भ कर दस दिनों तक मनुष्य को गोरस, गोबर अथवा गोमूत्र का आहार करके रहना चाहिए। यमराज के अनुसार एक बैल का दान करने से मनुष्य देवताओं का सेवक होता है। दो बैलों का दान करने पर उसे वेद विद्या की प्राप्ति होती है। उन बैलों से जुते हुए छकड़े का दान करने से तीर्थसेवन का फल प्राप्त होता है और कपिला गाय के दान से समस्त पापों का परित्याग हो जाता है। मनुष्य न्यायतः प्राप्त हुई एक भी कपिला गाय का दान करके सभी पापों से मुक्त हो जाता है। गोरस से बढ़कर दूसरी कोई वस्तु नहीं है; इसीलिये विद्वान् पुरुष गोदान को महादान बतलाते हैं। गौएँ दूध देकर सम्पूर्ण लोकों का भूख के कष्ट से उद्धार करती हैं। ये लोक में सबके लिये अन्न पैदा करती हैं। इस बात को जानकर भी जो गौओं के प्रति सौहार्द का भाव नहीं रखता, वह पापात्मा मनुष्य नरक में पड़ता है।

जो मनुष्य किसी श्रेष्ठ ब्राह्मण को सहस्त्र, शत, दस अथवा पाँच गौओं का उनके अच्छे बछडों सहित दान करता है अथवा एक ही गाय देता है, उसके लिये वह गौ परलोक में पवित्र तीर्थों वाली नदी बन जाती है।

पुनः यमराज नचिकेता से बतलाते हैं कि गाय इस पृथ्वी पर प्राप्ति, पुष्टि तथा लोक रक्षा करने के कारण सूर्य की किरणों के समान है। 'गो' शब्द का अर्थ- गाय और सूर्य की किरण दोनों ही होता है। जिस प्रकार सूर्य की किरणें जीवनदायनी होती हैं, समस्त प्रकार के सुख-समृद्धि प्रदान करती हैं उसी प्रकार गायें भी मनुष्य का सर्वविध कल्याण करती हैं। अतः गोदान करने वाला मनुष्य किरणों के दान करने वाले सूर्य के समान होता है। यमराज के अनुसार किसी योग्य गुरु की उपस्थिति में उनकी स्वीकृति के पश्चात् ही शिष्य को गोदान में प्रवृत्त होना चाहिए। अन्ततः यमराज नचिकेता से कहते हैं कि पृथ्वी पर जाकर न्याय के अनुसार गोधन प्राप्त कर, पात्र की परीक्षा कर वह श्रेष्ठ ब्राह्मणों को गाय का दान करें और दान की हुई गाय ब्राह्मण के घर तक पहुँचायें। धर्मात्मा नचिकेता से धर्मराज को ऐसे ही धर्म की अपेक्षा है।

इस प्रकार महाभारत के अनुशासन पर्व के दान, धर्म, पर्व में यमवाक्य नामक 71वें अध्याय में यमराज और नचिकेता का संवाद कहा गया है जिसमें यमराज द्वारा

विस्तारपूर्वक गोदान के माहात्म्य पर प्रकाश डाला गया है। महाभारतोक्त इस उपाख्यान में पिता वाजश्रवा के शाप से कुमार नचिकेता के यमलोक को जाने का सङ्केत करता है। मुख्यरूप से गोदान और उससे प्राप्त होने वाले पुण्य एवं सर्वविध सुख-समृद्धि की चर्चा की गयी है।

सन्दर्भ सूची

1. आख्यान शब्द का प्रयोग कात्यायन ने अपने वार्तिक 'आख्यानाख्यायिकेतिहासपुराणेभ्यश्च' में किया है जिसका उदाहरण भाष्यकार ने 'यावक्रीतिकः' तथा 'यायातिकः' दिया है।
2. यवक्रीत का आख्यान वनपर्व (अ.136-140) में दिया गया है तथा ययाति का आख्यान अपेक्षाकृत अधिक प्रख्यात है और अनेक पुराणों तथा महाभारत में वर्णित है।
3. उद्योग पर्व, 136/18
4. स्वर्गा., 5/51
5. आदि., 2/385
6. वही, 2/37
7. वही, 2/389
8. महाभारत, आदिपर्व, 28-83, पृ.सं.81
9. महाभारत अनु.पर्व, अ. 71वाँ, श्लोक सं. 19, पृ.सं. 315
10. वही, अ. 71वाँ, श्लोक.सं. 44, पृ.सं. 317